सत्यनारायण

अक्षरा से

अरी अक्षरा
तू है बढ़ी उम्र का
गीत सुनहरा

मेरे उजले केश
किंतु,इनसे उजली
तेरी किलकारी
तेरे आगे
फीकी लगती
चांद–सितारों की उजियारी
कौन थाह पायेगा
बिटिया
यह अनुराग
बड़ा है गहरा

तू हँसती है
झिलमिल करती
आबदार मोती की लड़ियां
तेरी लार–लपेटी बोली
छूट रहीं
सौ–सौ फुलझड़ियां
ये दिन हैं
खिलने–खुलने के
इन पर कहा
किसी का पहरा

होंठों पर
उग–उग आते हैं
दूध–बिलोये अनगिन आखर
कितने–कितने
अर्थ कौंधते
गागर में आ जाता सागर
मैं जीवन का वर्ण आखिरी
तू मेरा
अनमोल ककहरा।

चेतावनी

खबरदार
'राजा नंगा है'...
मत कहना

राजा नंगा है तो है
इससे तुमको क्या
सच को सच कहने पर
होगी घोर समस्या
सभी सयाने चुप हैं
तुम भी चुप रहना

राजा दिन को रात कहे तो
रात कहो तुम
राजा को जो भाये
वैसी बात करो तुम
जैसे राखे राजा
वैसे ही रहना

राजा जो बोले
समझो कानून वही है
राजा उल्टी चाल चले
तो वही सही है
इस उल्टी गंगा में
तुम उल्टा बहना

राजा की तुम अगर
खिलाफत कभी करोगे
चौराहे पर सरेआम
बेमौत मरोगे
अब तक सहते आये हो
अब भी सहना।

सम्पर्क–

डी ब्लाक,
बी.पी.सिन्हा पथ, कमदकुआं,

पटना–800003,(बिहार)